कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

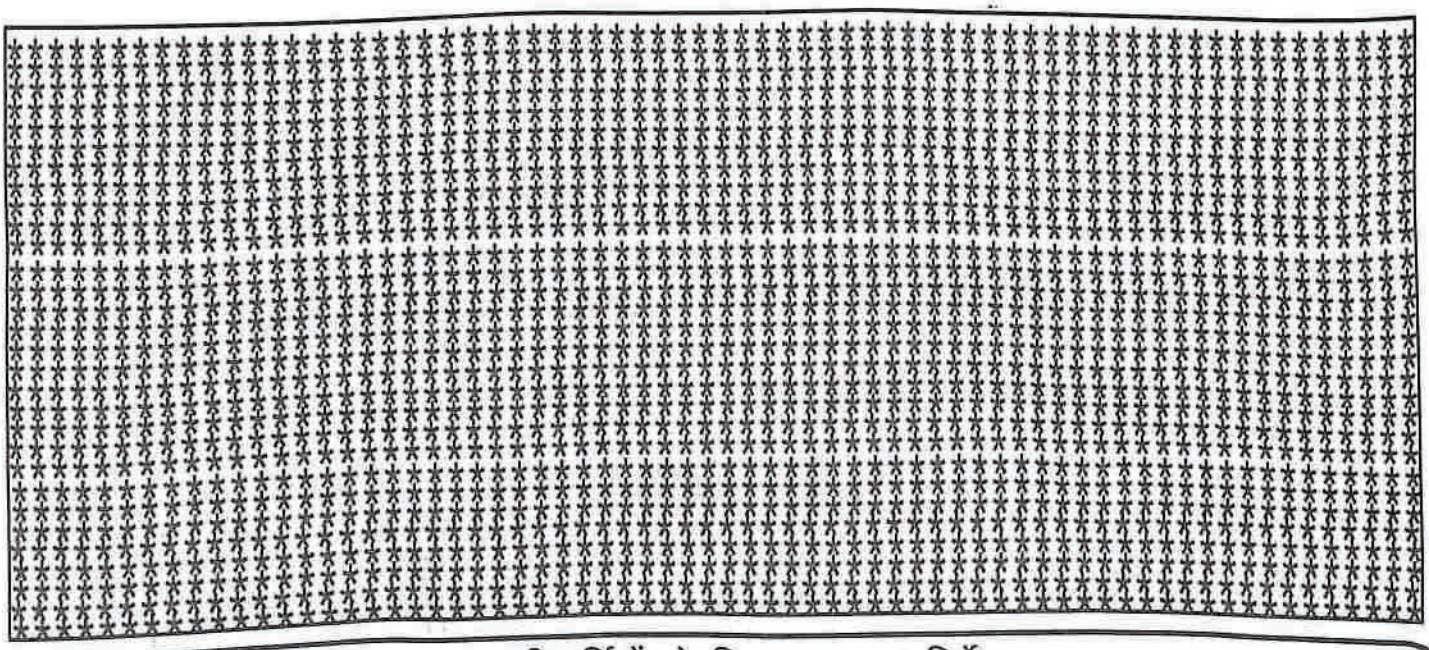

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षार्थी उत्तर

1. प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश हमारी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के पाठ 'कर्मयोगी केशवानन्दः' से संकलित है। इसमें स्वामी केशवानन्द के समाज को योगदान व उनकी उपलब्धियों का वर्णन है।

अनुवाद - स्वामी का जीवन सभी सम्प्रदायों के लिए सद्भाव का उदाहरण है। यह जाट जाति के तो थे, परन्तु सिक्ख गुरु नानकदेव के पुत्र श्री चन्दन के द्वारा परिवर्तित हो उदासी सम्प्रदाय में दीक्षित हुए। गुरु ग्रन्थसाहिब के ये उत्तम पठनकर्ता हुए। ग्यारह वर्ष की साधना से 700 पृष्ठों के सिक्ख धर्म के इतिहास का लेखन करवाया। विभाजन के समय (भारत-पाक विभाजन) हुई हिंसा में घायल हुए मुस्लिम भाईयों का इन्होंने उपचार करवाया।

2. प्रसंग - यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के पाठ 'सुभाषित रत्नानि' से संकलित है। यहां बुरे मित्र को न अपनाने के बारे में बताया गया है।

अनुवाद - ऐसे मित्र जो हमारी पीठ पीछे हमारे कार्य में बाधा उत्पन्न करते हैं तथा हमारे सामने मीठी वाणी में बोला करते हैं; इस प्रकार के मित्रों को त्याग देना चाहिए जो जहर के घड़े होते हैं लेकिन उनके मुख पर दूध लगा होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

3. प्रसङ्गः - अयम् पद्यांशः अस्माकम् पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य पाठात् 'जय सुरभारति' उद्धृताः। अयम् डॉ. हरिरामाचार्येण विरचिता। अत्र सरस्वत्याः वन्दना कुर्वति स्म।

व्याख्याः - हे देवी सरस्वती। तव शरण्या सकल:त्रय भुवनम् धन्या सन्ति। तव चरणौ देवैः मुनिभिः च वन्दिता अस्ति। भवती काव्यस्य नवरसेषु एकः मधुरा कविता अन्तरा अस्ति। भवदीयाः स्मित अत्यन्त रुचिकरः अस्ति। भवती आभूषणेन सुसज्जिताः अस्ति।

4. प्रसङ्गः - नाट्यांशोऽयम् अस्माकम् पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति पाठात् उद्धृता। श्री नारायणशास्त्रीः कांकरः अस्य लेखकः अस्ति। मूलतः इदम् ~~'एकांकीनवरत्न'~~ 'एकाङ्कीसंस्कृतनवरत्नसुषमा' इत्याख्य नाट्यसंग्रहेषु संकलिता। सेनाभावे प्रतापः वने भ्रमन्तुम बाध्यः आसीत्। प्रतापः सर्वदारश्च संवादस्य अत्र वर्णनमस्ति।

व्याख्याः

प्रतापः - अरे अस्मान् धिक् अस्ति! यदि वयम् अस्माकं मातृभूमयाः रक्षा कर्तुम न समर्थः, तु अत्र वासेन अस्मभ्यः किम कारणम् अस्ति? (दीर्घ श्वासः त्यक्त) (इदम् पश्चात् कश्चन राजपुत्र - सर्वदारः प्रविशन्ति)

सर्वदारः - (राज्ञे उचितम् प्रणामम् कृत्वा) भवान् विजयतां महाराजः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

विजयताम् ।

प्रताप: - (दीर्घ नि:श्वस्य मुखम् उपरि कृत्वा च) हा माम् धिक् ! हे भ्रात: ! त्वम् अपि विजयध्वनि कृत्वा मां ~~लज्जयसे~~ लज्जयसे इच्छति ।

सर्वदार: - हे अस्माकम् प्राणानाम् आधार ! भवान् इदं किं वदति ? भवता स्वीय: धर्माय सर्व उपायम् कृतम् । भवता स्वाधीनतायै अनेका: कष्टा: अपि सोढम् । भवत: तु सदैव विजय: भविष्यति ।

5. (i) सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम् आसीत् ।

(ii) कस्तूरी मृगात् जायते ।

(iii) श्रीधर: भास्कर: वर्णोकरमहोदय: ।

(iv) पञ्चतंत्रस्य रचना पण्डित: विष्णुशर्मेण कृता ।

(v) यानि कर्माणि अनवद्यानि अस्माकम् तादृशानि कर्माणि सेवितव्यानि ।

(vi) सर्वे प्राणिन: प्रियवाक्यं प्रदानेन तुष्यन्ति ?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

6. ततस्तं कम् भूत्वा दशति ?

7. भवान् किम् वदति ?

8. कस्मात् सदा विजय एव भविष्यति ?

9. मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि ?

10. (i) विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति परेषां परिपीडनाय च।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

(ii) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदैव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

11. (क) परोपकारस्य महत्वम्।

(ख) (i) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।
(ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।
(iii) नदी स्वजलं न पिबति।
(iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम् विद्यते।
(v) परेषाम् उपकारः परोपकारः। ~~उच्यते~~

(ग) (i) 'वृक्षाः'।
(ii) 'सर्वे'।
(iii) मातृसमा उपकारिणी।
(iv) जीवनम्।

परीक्षक द्वारा प्रश्न अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

12. (i) महर्षि - महा + ऋषिः (गुण-स्वर-संधिः)
(ii) शिवोऽहम् - शिवः + अहम् (उत्वविसर्गसंधिः)

13. (i) गै + अकः - गायकः (अयादिस्वरसंधिः)
(ii) शिवस्+च - शिवश्च (श्चुत्वहल्संधिः)

14. (i) विशालभवनं - विशालम् भवनम् इति (कर्मधारयसमासः)
(ii) भरतशत्रुघ्नौ - भरतश्च शत्रुघ्नश्च (द्वन्द्वसमासः)
(iii) दिनम् दिनम् प्रति - प्रतिदिनम् (अव्ययीभावसमासः)

15 (i) द्वितीया विभक्ति - 'विना' पद प्रयोगे।
(ii) चतुर्थी विभक्ति - 'नमः' इति पद योगे।
(iii) द्वितीया विभक्ति - 'उपर्युपरि' पद योगे।

16. (i) धनी - श्रीधरः धनी आसीत्।
(ii) शिक्षिका - शिक्षिका बालाः पाठं पाठयति।

17. (i) बुद्धिमती - बुद्धि + मतुप् (स्त्रीलिङ्ग)

(ii) पार्वती - पार्वत + ङीप्

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

18. (i) अहम् श्वः देहलीं गमिष्यामि।

(ii) तृणानि इतस्ततः विकीर्णानि आसन्।

(iii) वयम् अधुनैव कार्यं सम्पादयामः।

19. जनेन ग्रामं गम्यते।

20. ~~भगिनी~~ भगिनी वस्त्रं प्रक्षालति।

21. अहम् नगरं गच्छामि।

22. (क) सपाद दशवादने।

(ख) पादोन दशवादने।

23. (क) कृषकः प्रातः क्षेत्रम् प्रतिगच्छति।

(ख) हट्टे त्रीणि महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति।

(ग) अहं रोटिकाम् खादामि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

24.

सुनगरम्
18 मार्च 2019

प्रियमित्र ! कवीन्द्र !

कुशली सन् कुशलं कामये । मा. शि. बोर्ड परीक्षा सन्निकटे वर्तते । अहम् समयसारिणीं निर्माय योजनया अधीयानः अस्मि । अधुना मम परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति । गुरवः सर्वोत्तमान् अङ्कान् प्राप्तुम् विद्यालये विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति । ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते । भवानपि योजनया एव अधीयानः स्याद् । गतः कालः न पुनरायाति, इति सूक्तिं सर्वदा अपि स्मर ।

भवत् मित्रम्
- नरेन्द्रः

25.

"वसतिस्वच्छता"

महेशः - निरञ्जन ! श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते ?
निरञ्जनः - अरे त्वं न जानासि ? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति ।
महेशः - अहो ! उत्तमः विचारः । सर्वैः श्वः कदा गम्यते ?
निरञ्जनः - प्रातः अष्टवादनाद् वामतः इदं कार्यमिदं भविष्यति ।
महेशः - पूर्वं कस्य भागस्य स्वच्छता करिष्यते ?
निरञ्जनः - आरभ्य विद्यामानस्य अधस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः ।
महेशः - तेन तद् रमणीया सुन्दरं च भविष्यति ।
निरञ्जनः - नालीनां स्वच्छता योजनायां स्वीकृता एव ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	26.	(i) महिला कुपम् जलम् आनयति।
		(ii) त्वं अपि गच्छ।
		(iv) अहम् गणितं विज्ञानं च पठामि।
		(v) मित्राय दुग्धं रोचते।
	27.	(i) पर्वतस्य पृष्टतः ग्रामः अस्ति।
		(ii) ग्रामे सुन्दराणि उपवनानि सन्ति।
		(iii) मध्ये च भगवतः शिवस्य देवालयोऽस्ति।
		(iv) पर्वतं निकषा एका नद्यं नदी प्रवहति।
		(v) ग्राम जनाः नद्यां तरन्ति।
		(vi) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव मनोहरः अस्ति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	28.	(i) एकदा एकः ~~वानरः~~ मकरः नद्यां वसति स्म ।
		(ii) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत् ।
		(iii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म ।
		(iv) मकरः वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत् ।
		(v) "फलानि अति मधुराणि" अतः वानर हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानर हृदयं खादामि ।
		(vi) वानरः मकरस्य प्रयासं बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान् ।

|| समाप्त ||